एक महान मनोरथ के लिए काम करना
साक्षात्कार एक विशेष शिक्षक के साथ
विजयश्री पी. एस.

यदि कोई स्कूल विकलांग और ग़ैर-विकलांग दोनों प्रकार के बच्चों को साथ में शिक्षा दे तो हमारे विद्यार्थी समुदाय बेहद ईमानदारी के साथ पारस्परिक सम्मान के बारे में सीखेंगे और समझेंगे! ऐसा ही एक अनुकरणीय स्कूल है — जीएचपीएस पेपर टाउन, बेलागोला, मंड्या। एक सरकारी स्कूल के शिक्षक की पहल ने उस नज़रिए को ही बदल दिया है जिस नज़रिए से नियमित स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे विकलांग बच्चों को देखते थे।

जिस दिन मैंने इस शहर का दौरा किया उस दिन पचास से अधिक अभिभावक अपने विशेष बच्चों के साथ स्कूल परिसर में एक मेडिकल कैम्प के लिए आए हुए थे। क्लस्टर अधिकारी ने हमें एक शिक्षक श्री सैयद खान से मिलवाया। उन्होंने बताया कि सैयद के कारण ही यह सब सम्भव हुआ है यानी स्कूल में प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केन्द्र प्रारम्भ हुआ है और एक शिक्षक के रूप में यह पूरी प्रक्रिया उन्हीं की मिल्कियत है। इधर-उधर भाग-दौड़ कर रहे बच्चों, अपने बच्चों की चिकित्सा सम्बन्धी स्थितियों के बारे में डॉक्टरों के साथ बातचीत करते हुए अभिभावकों और स्वेच्छा से व्यवस्थाओं पर ध्यान दे रहे शिक्षकों को देखकर मन में कुतूहल हुआ। मैंने स्कूल के बाद सैयद खान के साथ एक साक्षात्कार का अनुरोध किया। वे आसानी से मान गए।

विजयश्री : आपकी शैक्षिक पृष्ठभूमि क्या है? और आपने एक विशेष शिक्षक बनना ही क्यों पसन्द किया?

खान : मैंने अपना बीए पूरा किया और श्रीरंगपट्टनम तालुक में जीएचपीएस गणंगूरू में सहायक शिक्षक के रूप में काम करने लगा। अपनी सेवा के शुरुआती दौर में जब भी मैं शिक्षा विभाग के अपने सहकर्मियों से मिलता था तो हमें बहुत सारे विकलांग बच्चों की मृत्यु के बारे में पता चलता था। इस तरह की ख़बरें मुझे परेशान कर देती थीं। मैं सोचता था कि क्या इन बच्चों को केवल इसलिए मर जाना चाहिए क्योंकि उनके लिए कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। उस दौरान विभाग ने 90-दिवसीय *बुनादी* प्रशिक्षण आयोजित किया, जो सरकारी उच्च विद्यालयों के नव नियुक्त सहायक शिक्षकों के लिए एक परिचय प्रशिक्षण है। प्रशिक्षण के बाद प्रतिभागियों को एक परीक्षा उत्तीर्ण करनी थी। मैं उन सात प्रतिभागियों में से एक था जिन्होंने उस आकलन में सफलता प्राप्त की। हम सातों को स्पेशल बीएड सर्टिफिकेशन पूरा करने के लिए मध्य प्रदेश के भोज विश्वविद्यालय भेजा गया। कर्नाटक सरकार ने हमारी विशेष बीएड की डिग्री के लिए आर्थिक सहयोग किया था। मैंने इसे पूरा किया और एक विशेष शिक्षक के रूप में लौटा।

विजयश्री : आप इस विद्यालय में कब और कैसे आए?

खान : जब मैं अपना कोर्स करने के बाद लौटा तो इस स्थान पर कोई प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केन्द्र नहीं था। इसलिए, सबसे पहले तो हमें देखभाल केन्द्र की स्थापना के लिए एक क्षेत्र चुनना था। इसके लिए यह ज़रूरी था कि हम उस स्थान की पहचान करें जिसमें विकलांग बच्चों की संख्या सबसे अधिक हो। जब हमने स्वास्थ्य विभाग के रिकॉर्ड का सर्वेक्षण किया तो हमें पता चला कि केआरएस क्लस्टर में विकलांग बच्चों की संख्या सबसे अधिक थी। एक प्राथमिक चिकित्सा वैन के दल के साथ हमने भी पूरे क्षेत्र की यात्रा की और आँगनवाड़ी कर्मचारियों की मदद से विकलांग बच्चों के घरों का दौरा भी किया। हमने देखा कि दूरदराज़ के इलाक़ों में रहने वाले और आर्थिक रूप से ग़रीब परिवारों में बच्चों का स्वास्थ्य कैसे बिगड़ जाता है।

इसलिए, हमने स्वास्थ्य देखभाल केन्द्र की स्थापना के लिए जगह की तलाश शुरू की। तभी हमें पेपर टाउन स्कूल की इमारत का पता चला, जो विद्यार्थियों के कम नामांकन के कारण बन्द होने की कगार पर थी। हमने तुरन्त खण्ड शिक्षा विभाग से सम्पर्क किया और अनुरोध किया कि होबली के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केन्द्र यहीं स्थापित किया जाए और स्कूल को भी बनाए रखा जाए।

विजयश्री : क्या आपको तुरन्त अनुमति मिल गई?

खान : हाँ! और मैं इस ख़ुशख़बरी को लेकर बेहद उत्साहित था। तब तक मैंने इस बारे में चर्चा करके कुछ स्वयंसेवकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की भर्ती की क्योंकि मुझे पता था कि इस कार्य के लिए एक मज़बूत टीम का होना बहुत महत्वपूर्ण था। हमारी टीम इस स्कूल में पहुँची। पहली मंज़िल पर आधा इंच धूल जमी हुई थी जिसे साफ़ करना था। हमें ज़रूरत का बुनियादी सामान खरीदने के लिए एक प्राथमिक राशि भी मिली थी। हमने एक बोर्ड लगाया : 'पुनर्वसति केन्द्र' (पुनर्वास केन्द्र)। निचली मंज़िल पर नियमित स्कूल सुचारू रूप से चल रहा था, इसलिए मध्याह्न भोजन को लेकर हमें कोई परेशानी नहीं हुई। हम सब तैयार थे।

मैंने कल्पना की थी कि केन्द्र खुलने के अगले दिन ही अभिभावकों की बाढ़ आ जाएगी। लेकिन दुर्भाग्य से एक लम्बे समय तक कोई भी यहाँ नहीं आया।

विजयश्री : आपके लिए यह बात बहुत ही निराशाजनक रही होगी।

खान : मैंने महसूस किया कि न तो अभिभावक और न ही समुदाय ने स्पष्ट रूप से इस बात को समझा था कि यह केन्द्र किसलिए था और इसका क्या प्रयोजन था। इसलिए 2008 के मध्य में हम तीनों की यह मज़बूत टीम अभिभावकों से मिलने उनके घर गई। हमने आँगनवाड़ी स्वयंसेवक के साथ प्रत्येक परिवार से सम्पर्क किया। इन बच्चों की दयनीय दशा देखकर बहुत कष्ट हुआ। इसमें अभिभावक की ग़लती नहीं थी क्योंकि उन्हें इस बात की जानकारी ही नहीं थी कि इन बच्चों की देखभाल कैसे की जाए। कुछ बच्चे बीमारी के कारण बिस्तर पर पड़े हुए थे। उनके कमरे और उसके आसपास बिलकुल सफ़ाई नहीं थी। वास्तव में बच्चे अस्वच्छ वातावरण के कारण भी कष्ट भोग रहे थे।

जैसे-जैसे हम इन गाँवों में नियमित रूप से जाने लगे वैसे-वैसे हम इन परिवारों के क़रीब होते गए, हमारे बीच विश्वास का रिश्ता बना। समय के साथ-साथ जब हमें यह महसूस हुआ कि ये परिवार हमें और हमारे हस्तक्षेपों को सकारात्मक रूप से ले रहे हैं तो हम इस बात को लेकर आश्वस्त हो गए कि अब इन समुदायों के लिए जागरूकता कार्यक्रम शुरू किया जा सकता है जो कि हमारा अगला क़दम था। तब हमने पुनर्वास केन्द्र की अवधारणा प्रस्तुत की जहाँ विकलांग बच्चों को सुविधाएँ दी जाती हैं।

विजयश्री : क्या वे समझ पाए कि पुनर्वास केन्द्र उनके लिए क्या कुछ कर सकता है?

खान : अभिभावकों ने हमें घर पर प्राथमिक चिकित्सा और मूलभूत फ़िज़ियोथेरेपी करते हुए देखा था। इससे हमारे लिए यह स्पष्ट करना आसान हो गया कि पुनर्वास केन्द्र में दी जाने वाली सुविधाएँ घर पर किए गए बुनियादी अभ्यासों से अधिक ही होंगी। हमने परिवारों को यह कहकर मना लिया कि पुनर्वास केन्द्र में बच्चों को ले जाने से उन्हें भी थोड़ा और स्वतंत्र होने में मदद मिलेगी।

हमने पहले मेडिकल कैम्प में भाग लेने के लिए परिवारों को स्कूल में आमंत्रित किया, जिसके लिए अभिभावक तुरन्त सहमत हो गए। और जब एक बार उन्होंने देखा कि फ़िज़ियोथेरेपी की सुविधाओं, खेल सामग्री और खिलौनों से बच्चे बेहद ख़ुश हैं तो वे समझ गए कि केन्द्र में परामर्श देने के लिए डॉक्टर /विशेषज्ञ हैं तथा वे अपने बच्चों को यहाँ भेजने के लिए तैयार हो गए।

विजयश्री : इन अभिभावकों की रूढ़िवादी जीवनशैली और दूरस्थ स्थानों को देखते हुए तो यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

खान : इसके लिए हमारी टीम ने काफ़ी प्रयास किया। उनका विश्वास हासिल करने के लिए हमें कई महीनों तक काम करना पड़ा।

विजयश्री : इसके बाद केन्द्र ने क्या किया?

खान : अभिभावकों ने साफ़ तौर पर यह देखा कि स्कूल में आकर उनके बच्चे ख़ुश हैं। कुछ दिनों की थेरेपी के बाद कुछ बच्चे स्वतंत्र रूप से बैठने लगे। एक बच्चा धातु के फ्रेम के सहारे चलने लगा। ये सब उनके परिवारों के लिए किसी चमत्कार से कम नहीं था। अभिभावकों ने यहाँ एक मैत्री-क्लब का गठन किया और वे पूरा दिन बच्चों और हमारे (स्टाफ़ के) साथ बिताते थे। अब हम सब एक परिवार की तरह हैं।

विजयश्री : पुनर्वास केन्द्र में किस प्रकार की दिनचर्या रहती है?

खान : स्कूल की शुरुआत प्रार्थना सभा से होती है। फिर विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षाओं में जाते हैं। विकलांग बच्चे अपने अभिभावक और स्टाफ़ के साथ अपनी योजनाबद्ध दिनचर्या शुरू करते हैं, जैसे कि फ़िज़ियोथेरेपी, प्लेरूम, स्पीच थेरेपी आदि। दोपहर के भोजन के बाद ये बच्चे विषयों की पढ़ाई करने के लिए सम्बन्धित कक्षाओं में नियमित विद्यार्थियों के साथ बैठते हैं।

विजयश्री : तो सभी विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं?

खान : हाँ, सभी विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं (यह सुनकर मेरा मुँह खुला का खुला रह गया जिसे देखकर खान मुस्कराने लगे)।

विजयश्री : आप यह सब कैसे करते हैं? यह तो बहुत चुनौतीपूर्ण होगा।

खान : ऐसा नहीं है, मैडम। मैंने एक चीज़ सीखी है और वह यह है कि मध्यम गति से पढ़ाना एक ग़ैर-विकलांग बच्चे के लिए बहुत लाभकारी हो सकता है। लेकिन इस स्कूल में हमारे शिक्षकों को धीमी गति से पढ़ाना चाहिए क्योंकि उन्हें यहाँ सभी विद्यार्थियों का ध्यान रखना पड़ता है। नतीजतन ग़ैर-विकलांग बच्चे भी बड़ी कुशलता के साथ सीख पाते हैं।

दोनों प्रकार के विद्यार्थियों को इस स्कूल में जिस तरह का समावेशन प्रदान किया गया है, वह बहुत बड़ी बात है। विद्यार्थी अपने साथियों के साथ सीखने की इस प्रक्रिया में जुड़कर आगे बढ़ते हैं। स्कूल के समय के दौरान अभिभावक भी यहाँ होते हैं और विद्यार्थियों के अधिगम में सहायता भी करते हैं। विद्यालय का पूरा वातावरण प्रत्येक विद्यार्थी के समग्र विकास में सहायक होता है। अधिगम के लिए यह एक असाधारण स्थान है!

विजयश्री : सर, आप विभिन्न विभागों के साथ कैसे काम करते हैं?

खान : यदि शिक्षा, स्वास्थ्य और महिला व बाल कल्याण विभाग तीनों सहयोग के साथ काम करें तो हम बदलाव ला सकते हैं या बदलाव देख सकते हैं।

विजयश्री : आप इन सभी पहलुओं का प्रबन्धन कैसे करते हैं जैसे कि समुदाय के साथ सहयोग करना, स्कूल की दिनचर्या का पालन करना, विभिन्न सरकारी विभागों के साथ काम करना और सबसे महत्त्वपूर्ण बात हर बच्चे के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करना?

खान : हमारे पास शिक्षकों, कर्मचारियों और अभिभावकों की एक मज़बूत टीम है। यहाँ की व्यवस्था पारदर्शी है। उदाहरण के लिए यदि कोई फंड या विशेष छात्रवृत्ति जारी होती है, तो मैं तुरन्त सभी हितधारकों की बैठक बुलाता हूँ और हम सामूहिक रूप से निर्णय लेते हैं कि हम उस फंड का उपयोग कैसे करें। जब किसी महान मनोरथ के लिए काम करते हैं तो पारदर्शिता बनाए रखना और संसाधनों का सही उपयोग करना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

विजयश्री : अब जब आपने ऐसे असाधारण कार्य को पूरा कर लिया है तो आपके जीवन का लक्ष्य क्या है?

खान : मुझे तो लगता है कि मैंने कुछ नहीं किया है और इस क्षेत्र में अभी भी बहुत काम करना बाक़ी है। सभी बच्चों को जीने का मौलिक अधिकार है और मेरी इच्छा है कि हमें एक पूर्ण रूप से विकसित अस्पताल शुरू करना होगा जो विकलांग बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करता हो। मुझे यह भी लगता है कि सभी बच्चों को समान अवसर मिलने चाहिए। हमारा एक पूर्व विद्यार्थी अब मैसूर विश्वविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई कर रहा है। जब हमें पता चला कि वह किसी अन्य सामान्य विद्यार्थी की तरह ही जीवन जी रहा है तो हमें बहुत गर्व हुआ। उसके लिए यह इसलिए सम्भव हो पाया क्योंकि स्कूली जीवन के दौरान उसे स्पीच थेरेपी दी गई थी। मैं शिक्षा विभाग से अनुरोध करता हूँ कि हमारे स्कूल के लिए इस नारे पर विचार करें, 'यह स्कूल विकलांग बच्चों को समान अवसर प्रदान करता है'।











विजयश्री पी.एस. एक स्रोत व्यक्ति हैं और अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन में बेंगलूरु ज़िले के अर्बन स्कूल इनिशिएटिव में कार्यरत हैं। उनसे vijayashree.ps@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : नलिनी रावल